भजन

हो दुनिया वालो हमसे सुनो–2
ब्रह्मज्ञान की है जो अमृत वाणी

1– माया के चक्कर में फंस कर
कुछ न मिलेगा माया वालो
मुक्ति पानी है गर तुमको,
ब्रह्मज्ञान सतगुरू से पा लो
फंसे ही रहोगे जो बात ये न मानी

2– पा लो पा लो ब्रह्मज्ञान तुम,
धनी चरणों में ध्यान लगा के
पछताओगे वर्ना फिर तुम,
मानवतन की योनि गंवा के
सतगुरू से ले लो ये प्यार की निशानी

3– एक को ही परमात्मा कहते,
पर न माने एक को कोई
झूठ को ही परमात्मा कहके,
यूंही सारी उम्र है खोई
कोई नहीं अपना ये दुनिया है फानी